रेकी, सहज योग.. और मेस्मेरिज़्म

डॉ. सुशील जोशी

आजकल रेकी, चुम्बक चिकित्सा, सहज योग वगैरह बहुत लोकप्रिय हो चले हैं। वास्तु भी काफी ख्याति प्राप्त कर रहा है। लेकिन यह सवाल फिर भी पूछा जाता है कि क्या ये कारगर हैं। मेरे पास इन सबका बहुत ही सीमित अनुभव है। अतः इस सवाल का जवाब देने में मैं कठिनाई महसूस करता हूं। किन्तु हाल ही में मैंने स्टीफन जे गोल्ड नामक प्रसिद्ध विज्ञान लेखक का एक लेख पढ़ा। इस लेख ने सीधे-सीधे उपरोक्त सवाल का जवाब तो नहीं दिया मगर जवाब पाने की दिशा अवश्य स्पष्ट कर दी। यहां बरास्ते मेस्मरिज़्म के रेकी आदि की बात की गई है।

मेस्मेरिज़्म

अट्ठारहवीं सदी के उत्तरार्ध में फ्रान्स में एक व्यक्ति हुए थे फ्रान्ज़ एन्तोन मेस्मर। मेस्मेरिज़्म या मेस्मेराइज़ेशन इन्हीं के नाम से बने शब्द हैं। आज हम मेस्मेरिज़्म का अर्थ सम्मोहन से लगाते हैं किन्तु अट्ठारहवीं सदी के फ्रान्स में इसका अर्थ कुछ और ही था। मेस्मर ने 'जन्तु चुम्बकत्व' की विचित्र किन्तु आकर्षक संकल्पना विकसित की थी। उनका कहना था कि पूरे ब्रह्मण्ड में एक तरल विद्यमान है जो समस्त पिण्डों (सजीव व निर्जीव) को आपस में जोड़ता है। उनके मुताबिक इस तरल को हम अलग-अलग नामों से जानते हैं : ग्रहों की गति के संदर्भ में हम इसे गुरुत्व कहते हैं, गाज गिरती है तो इसी को हम विद्युत के रूप में देखते हैं और दिक्सूचक यंत्र में हम इसे चुम्बकत्व कह देते हैं। यही तरल सजीवों में भी प्रवाहित होता है और इसे 'जन्तु चुम्बकत्व' का नाम दिया जाता है। यदि इस प्रवाह में कोई रुकावट पैदा हो जाए तो रोग उत्पन्न होते हैं। इन रोगों का इलाज चुम्बकत्व के प्रवाह को बहाल करके किया जा सकता है।

यह विचित्र तरह से दमकती अर्द्ध प्रतिमा उन्नीसवीं सदी के अंग्रेज़ डॉ. जॉन इलिओस्टन की है, जिन्होंने मेस्मरिज़्म को फैलाने में अपना जीवन लगा दिया। लेकिन इसे एक चिकित्सा पद्धति का दर्जा न मिल सका।

सवाल यह है कि चुम्बकत्व का प्रवाह अवरुद्ध होने पर उसे पुनः स्थापित कैसे किया जाए। मेस्मर ने इसकी भी विधि विकसित की। मेस्मर के मुताबिक किसी-किसी व्यक्ति में असाधारण रूप से शक्तिशाली चुम्बकत्व होता है। ऐसा व्यक्ति यदि उचित प्रशिक्षण प्राप्त कर ले तो वह अन्य व्यक्तियों के शरीर के चुम्बकीय ध्रुवों को पहचान सकता है। अब इन ध्रुवों की मालिश करके वह मरीज़ के अवरुद्ध चुम्बकत्व को फिर से प्रवाह में ला सकता है।

उपचार विधि

ज़ाहिर है कि स्वयं मेस्मर में यह अद्भुत शक्ति थी। किसी मरीज़ का इलाज करने के लिए वे मरीज़ के ठीक सामने बैठ जाते और उसके घुटनों को अपने घुटनों के बीच दबा लेते। इसके बाद वे मरीज़ की उंगलियों को अपनी उंगलियों से छूते व उसके चुम्बकत्व प्रवाह को सामान्य करने का प्रयास करते। इसके परिणाम प्रायः नाटकीय होते थे। चन्द मिनटों में ही मरीज़ लगभग 'सन्निपात' की स्थिति में होता। मरीज़ का शरीर थर्राने लगता, वह हाथ-पांव फेंकने लगता, दांत किटकिटाने लगता, चीखता-चिल्लाता और अन्त में बेहोश हो जाता। यह उपचार कई बार दोहराया जाता ताकि चुम्बकत्व का प्रवाह भलीभांति होने लगे। इस तरह मेस्मर उपचार करते थे। उनके कट्टर आलोचक भी मानते हैं कि इससे कुछ मरीज़ों का तो रोग निवारण होता ही था।

धीरे-धीरे मेस्मर बहुत लोकप्रिय